बिहार कृषि रोडमैप

☛ बिहार की कुल 93.60 लाख हेक्टेयर भौगोलिक भूमि में से लगभग 53.4 लाख हेक्टेयर भूमि खेती के लिए उपलब्ध है। 10,40,99,452 (जनगणना 2011) की जनसंख्या के साथ बिहार भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। उनमें से लगभग 88.7% ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और उनमें से अधिकांश कृषि पद्धतियों में शामिल हैं और वह भी निर्वाह प्रकृति के हैं, क्योंकि अधिकांश किसान छोटे और सीमांत हैं जिनके पास बहुत कम भूमि है। ये बिहार के किसानों को असुरक्षित बनाते हैं, क्योंकि एक साल का सूखा उनके लिए गरीबी और भुखमरी का कारण बन सकता है। इसके अलावा, बिहार में किसानों को वैकल्पिक रोजगार प्रदान करने के लिए बहुत अधिक औद्योगिक विकास और शहरीकरण भी नहीं है।

☛ इसलिए किसानों की आय बढ़ाने के लिए बिहार सरकार 2008 से 2023 तक चार कृषि रोडमैप लेकर आई।

☛ इन रोडमैप का उद्देश्य खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि उत्पादन में वृद्धि करना, कृषि क्षेत्र में बढ़ावा के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि के साथ-साथ वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की संभावनाओं में वृद्धि करना है, जिससे प्रवासन में कमी आएगी, इसका उद्देश्य यह भी है कृषि विकास का समान वितरण और साथ ही जैविक खेती तकनीकों के माध्यम से पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने को बढ़ावा देता है।

कृषि रोडमैप के उद्देश्य

❖ **तीनों रोडमैप के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे:-**

1. खाद्य सुरक्षा।
2. पोषण सुरक्षा।
3. किसानों की आय में वृद्धि।
4. रोजगार सृजन और इसलिए बाहरी प्रवासन पर नियंत्रण।
5. महिलाओं की समान भागीदारी के साथ कृषि उत्पादन का समावेशी विकास।
6. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और उनका सतत उपयोग।

पहला कृषि रोडमैप

❖ 2007 में 2012 तक 5 वर्षों के लिए लॉन्च किया गया। इस रोडमैप में सरकार का लक्ष्य कृषि क्षेत्र में 3 बुनियादी विकास करना है यानी बीज विकास, जैव-खेती और किसानों को आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना।

☛ **उठाए गए कदम**

1. **बीज विकास:-** इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार ने दो योजनाएं (i) लॉन्च कीं बीज विस्तार योजना एवं (ii) बीज ग्राम योजना। इन योजनाओं में कम से कम 23 फसलों के प्रमाणित बीजों की उपलब्धता की आवश्यकता पर बल दिया गया।
2. **जैव खेती:-** सरकार ने किसानों को जैविक खाद और खेती की अन्य टिकाऊ तकनीकों के उपयोग के लिए प्रभावित करके जैव-खेती पर जोर दिया।
3. **आधुनिक कृषि उपकरण:-** इस रोडमैप में सरकार ने किसानों को कृषि उपकरण खरीदने के लिए सब्सिडी प्रदान करके कृषि मशीनीकरण को बढ़ाने का प्रयास किया।

उपलब्धियों

रोडमैप ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की।

1. बीज प्रतिस्थापन राशन (एसआरआर) एक नई ऊंचाई पर पहुंच गया, जबकि कुछ फसलों में एसआरआर 2012 में 83% से अधिक तक पहुंच गया।
2. 2012 में बिहार में खाद्यान्न उत्पादन 178.29 लाख टन के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया।
3. न केवल कुल उत्पादन में बल्कि प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन भी नई ऊंचाई पर पहुंच गया।

दूसरा कृषि रोडमैप

☛ यह रोडमैप 2012 में प्रणब मुखर्जी द्वारा लॉन्च किया गया था। इस रोडमैप का लक्ष्य (i) हासिल करना है। खाद्य सुरक्षा, (द्वितीय) पोषण सुरक्षा और (iii) किसानों की आय में वृद्धि.

उठाए गए कदम

1. इन उद्देश्यों को बिजली की पर्याप्त आपूर्ति लागू करके हासिल करने का प्रयास किया गया था।
2. सरकार ने 250 से अधिक आबादी वाले आवासों/गांवों को कंक्रीट सड़कों के निर्माण के माध्यम से जोड़ने की योजना बनाई है।

3. इसका उद्देश्य गोदामों का निर्माण करके भंडारण सुविधा में सुधार करना भी था।
4. इंद्रधनुष क्रांति की शुरुआत करना अर्थात कृषि, बागवानी, वानिकी, गन्ना, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन और पशुपालन को एक साथ बढ़ावा देना ताकि अनिश्चित जलवायु के कारण किसानों की भेद्यता को कम किया जा सके और उनकी कृषि आय में वृद्धि की जा सके।
5. ग्लोबल वार्मिंग को देखते हुए और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए, सरकार ने 2017 तक वन क्षेत्र को 9% से बढ़ाकर 15% करने के लिए भी कदम उठाए।

उपलब्धियों

1. खाद्यान्न के कुल उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि देखी गई और 2012 में 178.29 टन से बढ़कर 2017 में 252.01 लाख टन तक पहुंच गया।
2. खाद्यान्न के साथ-साथ तिलहन, फल और सब्जियों में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।
3. पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन क्षेत्र में भी सकारात्मक वृद्धि देखी गई लेकिन यह क्षेत्र जितना होना चाहिए उससे पीछे है।

तीसरा कृषि रोडमैप

☛ यह रोडमैप 9 नवंबर, 2017 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा 5 साल यानी 2017-2022 की अवधि के लिए लॉन्च किया गया था। रोडमैप में खाद्य प्रसंस्करण, सिंचाई, बाढ़ सुरक्षा और डेयरी विकास सहित कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास के लिए 1.54 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए।

☛ रोडमैप में अगले पांच वर्षों में प्रत्येक भारतीय की थाली में कम से कम एक व्यंजन सुनिश्चित करने का दृष्टिकोण भी रखा गया है।

उठाए गए कदम

1. रोडमैप में गंगा जैसी प्रमुख नदियों के साथ-साथ राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों के किनारे जैविक खेती गलियारे विकसित करने का प्रस्ताव है। इसके लिए सरकार पहले ही रुपये ट्रांसफर कर चुकी है. 20000 किसानों में से प्रत्येक को 6000 रुपये दिए जाएंगे ताकि वे जैविक खेती करने में सक्षम हो सकें।
2. किशनगंज में बिहार मात्स्यिकी महाविद्यालय की स्थापना।
3. कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने पटना के नौबतपुर ब्लॉक में 11 किलोवोल्ट कृषि फीडर की आधारशिला रखी।
4. रोडमैप में तीन स्तरीय बिहार सब्जी प्रसंस्करण और वितरण सहकारी प्रणाली स्थापित करने पर भी जोर दिया गया है।
5. रोडमैप की एक अन्य महत्वपूर्ण पहल में मध्याह्न भोजन योजना के तहत छात्रों को सप्ताह में कम से कम एक बार पौष्टिक भोजन, विशेष रूप से अंडे और मौसमी फल प्रदान करने के लिए 151.14 करोड़ रुपये की मंजूरी शामिल है।

उपलब्धियों

1. उच्च उत्पादकता के लिए कृषि कर्मण पुरस्कार - 5वीं बार
2. प्रसंस्करण क्षमता में सुधार - मक्का प्रसंस्करण में 3.54 लाख मीट्रिक टन और गेहूं प्रसंस्करण में 50000 टन की वृद्धि हुई।
3. नवीन चावल मिल एवं आटा मिल की स्थापना
4. भंडारण क्षमता में 3.26 लाख टन का सुधार।
5. मछली उत्पादन में वृद्धि - पहले 2.88 लाख मीट्रिक टन था अब 7.62 लाख मीट्रिक टन हो गया है। (मछली उत्पादन के मामले में बिहार भारत में चौथे स्थान पर है)
6. लीची, स्ट्रॉबेरी, मखाना, मशरूम, भिंडी, कद्दू के उत्पादन के मामले में बिहार पहले स्थान पर है।

☛ कृषि उत्पादों को जीआई टैग -मिथिला मखाना, शाही लीची, भागलपुरी जर्दालू आम, कतरनी चावल, मगही पान, मार्चा चावल।

चौथा कृषि रोडमैप

☛ चौथा बिहार कृषि रोडमैप (2023-2028) 18 अक्टूबर, 2023 को पटना में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा लॉन्च किया गया था।.

रोडमैप का लक्ष्य है:

- राज्य की जनसंख्या के लिए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करना
- किसानों की आय बढ़ाएं
- कृषकों के लिए लाभकारी रोजगार उपलब्ध कराना
- माइग्रेशन की जाँच करें
- समान कृषि विकास सुनिश्चित करें
- लिंग और मानवीय पहलुओं पर ध्यान दें
- प्राकृतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करें

☛ राष्ट्रपति ने कहा कि कृषि बिहार की लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा और यहां की अर्थव्यवस्था का आधार है. उसने यह भी कहा:

- जल संरक्षण आवश्यक है
- जलवायु- अनुकूल कृषि पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी
- जैविक खेती की मांग बढ़ रही है

☛ बिहार के प्रमुख कृषि उत्पाद अनाज, दालें, तिलहन और नकदी फसलें हैं।

❑❑❑